

अष्टग्रही वि. (तत्.) ज्यो. वह योग या विशिष्ट समय जब ज्योतिषोक्त आठ ग्रह एक ही राशि में स्थित होते हैं।

अष्टछाप पुं. (तत्.+तद्.) वल्लभ संप्रदाय के कृष्ण भक्त आठ कवियों का विशेष समूह-सूरदास, कुंभनदास, परमानंद दास, कृष्णदास, छीत स्वामी, गोविंद स्वामी, चतुर्भुजदास और नंददास।

अष्टदिशा स्त्री. (तत्.) आठ दिशाएँ पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, वायवी, उत्तर, ईशान।

अष्टद्रव्य पुं. (तत्.) यज्ञ की सामग्री के आठ द्रव्य-पीपल, गूलर, पाकड़, बरगद, तिल, सरसों, पायस और घी।

अष्टधातु स्त्री. (तत्.) आठ धातुएँ सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा और पारा।

अष्टनायिका स्त्री. (तत्.) दुर्गा की आठ शक्तियाँ अग्रचंडा, प्रचंडा, चंडोग्रा, चंडनायिका, अतिचंडा, चामुंडा, चंडा, चंडवती काव्य. काव्यशास्त्र में वर्णित आठ प्रकार की नायिकाएँ- स्वाधीनपतिका, विरहोत्कंठिता, विप्रलब्धा, वासकसज्जा, खंडिता, कलहांतरिता, अभिसारिका और प्रोषितपतिका तंत्र. मंगलादि आठ देवियाँ-मंगला, विजया, भद्रा, जयंती, अपराजिता, नंदिनी, नारसिंही और कौमारी।

अष्टपद पुं. (तत्.) 1. आठ पैरों वाला जीव, शलभ वि. (तत्.) आठ पैरोंवाला।

अष्टपदी स्त्री. (तत्.) 1. एक छंद 2. एक प्रकार का गीत 3. एक प्रकार की चमेली 4. बेल का फूल और पौधा।

अष्टपाद पुं. (तत्.) आठ पैरों वाला जीव।

अष्टपुत्र पुं. (तत्.) आठ दलों का कमल।

अष्टप्रकृति स्त्री. (तत्.) राज. 1. प्राचीन भारतीय राजतंत्र के अनुसार राज्य के आठ अंग- राजा, राज्य (राष्ट्र), अमात्य, दुर्ग, सेना, कोष, सामंत और प्रजा 2 राज्य के आठ अधिकारी सुमंत्र, पंडित, मंत्री, प्रधान, सचिव, अमात्य, न्यायाधीश और प्रतिनिधि।

अष्टप्रधान पुं. (तत्.) आठ प्रकार के मुख्य राज पुरुष प्रधान, अमात्य, सचिव, मंत्री, धर्माध्यक्ष, न्यायाशास्त्री, वैद्य और सेनापति।

अष्टफलक पुं. (तत्.) गणि. वह त्रिआयामी ठोस फलक जिसमें आठ समतल फलक हों।

अष्टभुजा स्त्री. (तत्.) आठ भुजाओं वाली, दुर्गा।

अष्टभुजी स्त्री. (तत्.) दे. अष्टभुजा।

अष्टम पुं. (तत्.) गणना क्रम में सातवें के बाद का स्थान, आठवाँ।

अष्टमी स्त्री. (तत्.) चंद्र मास के कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष की आठवीं तिथि।

अष्टमूर्ति पुं. (तत्.) भगवान शिव जिनके आठ रूप हैं पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, सूर्य, चंद्र तथा ऋत्विज।

अष्टयाम पुं. (तत्.) 1. दिन-रात के आठ पहर टि. 1. एक पहर या प्रहर प्रायः 3 घंटे का माना जाता है, दोपहर, तीसरा पहर, चौथा पहर आदि प्रयोग भाषा में होते हैं 2. ऐसी काव्य-रचना जिसमें नायक-नायिकाओं के आठों प्रहरों के अलग-अलग क्रियाकलापों का चित्रण होता है।

अष्टयोग पुं. (तत्.) महर्षि पतंजलि द्वारा निर्दिष्ट योग जिसके यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये आठ अंग हैं।

अष्टवर्ग पुं. (तत्.) 1. आयुर्वेद की आठ औषधियों का समूह-जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीर काकोली, ऋद्धि तथा वृद्धि 2. राजनीति के अनुसार राज्य के आठ अंग या वर्ग ऋषि, वस्ती, दुर्ग, सेतु, हस्तिबंधन, खान, कर-ग्रहण और सैन्य संस्थापन।

अष्टविध वि. (तत्.) आठ प्रकार का।

अष्टसिद्धि स्त्री. (तत्.) शास्त्रोक्त आठ प्रकार की सिद्धियाँ अणिमा (अपने शरीर का आकार छोटा कर सकना), महिमा (आकार बढ़ा सकना) गरिमा (शरीर भारी कर लेना) लघिमा (शरीर हल्का कर लेना) प्राप्ति (अभीष्ट वस्तु प्राप्त करना), प्राकाम्य (इच्छानुसार शरीर परिवर्तन या अन्य कुछ भी कर सकना), ईशित्व (किसी से